Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 05 May 2024 Pages 20 A.S. Rs 100

GRAND SAMUH MAHAPOOJA AT SYDNEY-AUSTRALIA

सत्संग समाचार

❊ **रविवार, दि. ७ अप्रैल की भजन संध्या कल्याण के चैतन्य बैंकेट हॉल में स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्यपर्व और गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृतिदिन निमित्त विशिष्ट भजनों द्वारा हुई।**

Welcome at Bhajan Sandhya, Kalyan

सभी हरिभक्तोंने तथा बालमंडल के बच्चोंने लेझिम करके सभी संतभाईयों, संतबहनें तथा सभी हरिभक्तों का स्वागत किया।

Bhajan Sandhya at Kalyan

प.पू. वशीभाई ने कहा कि कल्याण के मंडल के भडांगेसाहब और अनिलभाई वडनेरे तथा अन्य हरिभक्तों की भावना से यहाँ भजन संध्या आज हम मना रहे है। संवत १८३७ के चैत्र मास में रामनवमी के मंगल दिन पर स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए। सारे शास्त्रों का सार उन्होंने वचनामृत ग्रंथ के रुप में हमें दिया है। मानव के साथ जीव-प्राणी मात्र के कल्याण करने महाराजने केवल करुणा ही सभी पर बरसाई। उन्होंने हमें प्रगट स्वामिनारायण मंत्र दिया। उसी प्रकार गुरुहरि काकाजी महाराजने भी सभी को केवल प्रेम ही किया। काकाजीने सहज ही स्वामिनारायण धुन हमें सिद्ध करवाई। अनुभव ज्ञान सबसे उत्तम होता है। वो काकाजीने खुद जीकर हमें प्रत्यक्ष दिखाया। काकाजीने हमें बहुत कुछ दिया है, उनको जितना धन्यवाद दे उतना कम है। तो पवई में होनेवाले Project में हम तन-मन-धन से जुड जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि स्वामिनारायण भगवान और रामचंद्रजी का प्रागट्यदिन हम एक ही दिन मनाते है। उन्होंने जो कार्य किया वह अद्भुत है। मानवरुप में वे पृथ्वी पर पधारे वह

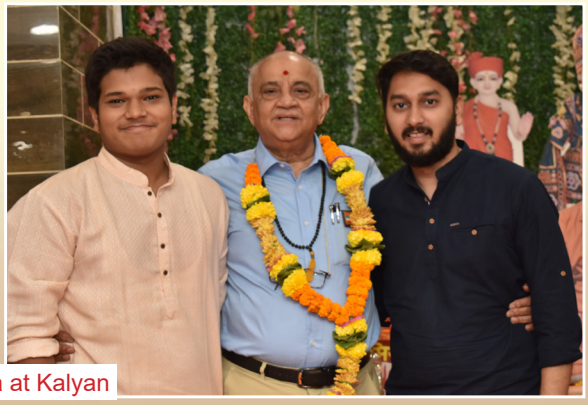

Bhajan Sandhya at Kalyan

सबसे बडी देन है। अभी हम हररोज सायं और रात को स्वामिनारायण का मंत्रजाप करते है। वैसे नियमित करेंगे तो हमें बहुत फायदा होगा। स्वामिनारायण भगवान के प्रसंग की ७-७ स्मृति हमें याद करनी चाहिए। श्रीजी महाराजने हमें बहुत बडा वरदान दिया है। सबसे बडा वरदान यानि गुणातीत संत द्वारा वे अखंड पृथ्वी पर प्रगट रहेंगे। जिसे प्रभु की सच्ची पहचान हो गई है उसे किसी बात का मोह होता ही नहीं है। मंदिर की मूर्ति में वे प्रगट ही है। सच्चे दिल से हम प्रार्थना करेंगे तो वे जरुर सुनेंगे। पवई मंदिर में कई लोगों को उसका अनुभव हुआ है। उन्होंने वचनामृत और शिक्षापत्री हमें भेट में दी है। जब भी हमें कोई प्रश्न का हल ना मिले तो उसमें से उसका जवाब अवश्य मिल जाता है। गुरुहरि काकाजी हरपल हमारी रक्षा में वे आगे से काम कर रहे है। उससे गुणातीत स्वरुपों के आशीष हमें सहज ही प्राप्त होते है। कल्याण मंडल को धन्यवाद देते है कि सभीने मिलकर बहुत अच्छे से सारी व्यवस्था की है। तो सभीको महाराज सुखी रखें वही प्रार्थना।

❊ **सोमवार, दि. १७ अप्रैल को योगी डिवाईन सोसायटी, सद्भाव फाउन्डेशन तथा रोटरी कलब-मुंबई के सहयोग से कर्जत तालुका के कडाव गांव की छात्राओं के लिये उनको घर से स्कूल आने-जाने की सुविधा हो सके इसलिये Bicycle वितरण की व्यवस्था हेतु प.पू. वशीभाई और पू. आनंदभाई खास पधारे थे। छात्राओं के मातापिताने इस सुविधा हेतु तीनों संस्थाओं के ट्रस्टीओं का आभार व्यक्त किया और वशीभाईने अपने वक्तव्य में सभी छात्राओं को आशीष देकर अच्छी पढाई करके आदर्श नागरिक बनने के लिये प्रेरणा दी।**

Bicycle distribution at Karjat

❊ बुधवार, दि. १७ अप्रैल को हरिजयंती और रामनवमी निमित्त विशिष्ट सभा 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में आनंदोत्सव के साथ हुई।

सुबह में स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्यदिन निमित्त विशिष्ट महापूजा हुई, जिसमें महापूजा के आसन को बदला भी गया। इस उपलक्ष्य में Jalaja Foundation के ट्रस्टी श्री जे.पी. शेट्टी और उनकी पत्नी भी खास आशीर्वाद लेने पधारे थे।

Swaminarayan Bhagwan Pragatyadin and Ramnavami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

प्रारंभ में गायकवृंदने श्रीजी महाराज और रामचंद्रजी के प्रागट्यदिन निमित्त भजन प्रस्तुत किये। उसके बाद छोटे-छोटे बच्चोंने भी स्वामिनारायण भगवान के भजन गाकर अपनी भक्ति अदा की।

Online के माध्यम से बालमंडल के बच्चों द्वारा श्रीजी महाराज के प्रसंगो की स्मृति कराते हुए विशिष्ट Video के सभीने दर्शन किये।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि करीब १ महिने से हमने स्वामिनारायण भगवान की स्मृति में विशिष्ट धुन की। उनके जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने मिलता है। हमारे लिये उन्होंने मानवदेह में पृथ्वी पर जन्म लिया। ११ साल की उम्र में उन्होंने घरत्याग कर दिया। इतनी छोटी उम्र में ही सभीको कहते थे कि मैं तो जीवों के कल्याण करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ। महाराज हरपल हमारे साथ है ऐसा अनुभव वे खुद ही करवाते है, लेकिन हम भूल जाते है और दुःखी होते है। हमारे जीवन में जब तक कोई गुरु नहीं हो या हमारा कोई निशान ना हो तब तक हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है। महाराजने जो भी चमत्कार दिखायें उसमें कोई ना कोई संदेश हमें दिया है। हरपल यहीं दर्शन कराया है कि मैं सभीको तारने आया हूँ। सहजानंद की उस सहज अवस्था का हमें अनुभव करना है। महाराजने स्वयं कहा है कि अगर तुम मेरे गुणातीत संत से जुड जाओंगे तो माया से पर

हो जाओंगे। हमें कुछ ना आये तो सभीको प्यार तो अवश्य बाँटे। हम सच्चे भाव से प्रार्थना करेंगे तो महाराज प्रगट होकर दर्शन देंगे। तो हमेशा महाराज हमारे साथ ही है ऐसा मानकर जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजीने धुन का हमारी रगरग में सिंचन किया है। इसलिये भजन सहज ही हमारे जीव में दृढ हो गया है। रामचंद्रजीने रावण का वध किया। उन्होंने तेरा-मेरा का झगडा छोडकर सभीका सहज स्वीकार करना वह खुद जीकर सीखाया। राजराणी होने के बावजुद सीताजीने बहुत कुछ सहन किया। ऐसे त्याग की भावना रामजी और सीताजी के जीवन में हमें सहज ही दिखती है। काकाजी कहते थे कि मेरी कभी

Swaminarayan Bhagwan Pragatyadin and Ramnavami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

नकल मत करना, लेकिन मैं जो बोलता हूँ उसे समझो और जीवन में उतारो। स्वामिनारायण भगवान यानि करुणा के सागर। हम पर उन्होंने अकारण ही कृपा की है। काकाजी कहते थे कि **श्रीजी महाराज यानि संबंध में कल्याण।** हम उनसे जुडे है इसलिये वे अवश्य अंतकाल में हमें लेने आयेंगे ही। सच्चे हृदय की प्रार्थना हमेशा प्रभु सुनते ही है। महाराज के पास हमारा बालकपना, निर्दोषता ही काम आता है। हमें जो प्रगट गुरु मिले है उन्होंने सचमुच हम पर अपरंपार कृपा ही की है। संत के वचन में पूर्ण विश्वास रखना चाहिए। वे हमारे हित का सब करेंगे। तो भगवान की ऐसी करुणा में हमें डूबे रहे वही प्रार्थना।

अंत में पूर्णाहुति की विशिष्ट आरती हुई।

Swaminarayan Bhagwan Pragatyadin and Ramnavami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

❊ शनिवार, दि. २० अप्रैल को कर्जत के अंदरुनी गांव में गर्मी के कारण पानी की बहुत ही कमी होती है और सारे ईलाके में अकाल जैसी परिस्थिति निर्माण होती है। योगी डिवाईन सोसायटी और सद्भाव फाउन्डेशनने मिलकर इस गांवो में Tanker के द्वारा पानी पहुँचाने की अद्भुत सेवा करके उन गांवो के लोगों को बडी सुविधा उपलब्ध कराई है। करीब १४ गांवो से ऐसी सुविधा के लिये मांग आई थी जिसे पूर्ण करने के लिये योगी डिवाईन सोसायटी और सद्भाव फाउन्डेशन प्रतिबद्ध हुए है। उनके इस सराहनीय प्रयत्न में जुडने के लिये कई हरिभक्तोंने भी हाथ बँटाया और इन गांवो में खास करके अप्रैल से जून महिने तक पानी की व्यवस्था हो इसलिये दोनों संस्थाओं को सहकार भी दिया है।

Distribution of Water at Vileeges of Kajat

❊ रविवार, दि. २१ अप्रैल को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में ७ से १० कक्षा के छात्राओं के लिये विशिष्ट Career Counselling Session रखा गया था। श्रीमती जागृति कानहेने बहुत ही अच्छी जानकारी दी। उनके साथ संभाजी नगर की हमारी युवती प.भ. गीताबहन कुंभकर्णने भी उन्हें अच्छा सहकार दिया। कईं बच्चों तथा उनके माता-पिताने इस विशिष्ट Seminar में खास भाग लिया था। प.पू. वशीभाई और प.पू. भरतभाईने मंदिर की ओर से उनका खास अभिवादन भी किया।

Career Counselling Session at "Akshardham" Temple, Powai

Career Counselling Session at "Akshardham" Temple, Powai

उसी दिन शाम को देश-विदेश के युवकों द्वारा आज की युवापेढी को भविष्य में आगे बढने के लिये Online International Youth सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें पू. अक्षयभाई आहिर (संभाजी नगर)ने ब्रह्मविद्या अध्ययन पर, प.भ. मुकेशभाई जाधव (Bangluru)ने Airbus in India पर, प.भ. ओम्भाई मोहिते, प.भ. विलयभाई और प.भ. सर्वेश्वरभाई (पवई)ने Integration of AI and Human Knowledge in improving Financial decision making पर, पू. विरेनभाई (सूरत)ने गुरुहरि पप्पाजी महाराज के सिद्धांतो पर, प.भ. बालाजी (पवई)ने The latest trends in Security via AI पर, प.भ. प्रसादभाई (पवई)ने How to manage growth पर, प.भ. चंदनभाई (USA)ने Recent Advancements in Technologies at Google पर, प.भ. बीनाबहन (London)ने लंडन में सत्संग पर अच्छी जानकारी दी। बाद में दिल्ली से प.पू. गुरुजी के Video द्वारा, शिकागो से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।

International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai

❊ सोमवार, दि. २२ अप्रैल से शनिवार, ४ मई दौरान प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. हितेनभाई ठक्कर, पू. मननभाई मर्चन्ट, प.भ. संकेतभाई मेघानंद **Australia** और **Singapore** की धर्मयात्रा के लिये एवं ऑस्ट्रेलिया में समूह महापूजा के लिये खास पधारे।

शुरुआत में प.पू. महेन्द्रबापु और प.पू. दिनकरभाई ऑस्ट्रेलिया पधारे थे, जिससे कईं नये हरिभक्तों सत्संग से जुडे। उसके बाद प.पू. दिनकरभाई और किशोरभाई मास्टर्सने सत्संग का कार्य आगे बढाया। १० साल पहले और गये साल यानि २०२३ में प.पू. भरतभाई ऑस्ट्रेलिया पधारे थे, जिससे यह मंडल ओर ज्यादा विकसित हुआ।

At Manishbhai's home

At Dharitbhai's home

At Ravibhai's home

At Jasminbhai's home

At Gurubaksh Singhji's home

At Krutiben's home

With Binaben

दि. २३ से ३० मई दौरान ऑस्ट्रेलिया में प.भ. मनीषभाई-शायोकाबहन, प.भ.संजयभाई-फोरमबहन विहारीया, प.भ. पीयुषभाई-पूनमबहन, प.भ. धीरजभाई-शिवानीबहन, प.भ. जस्मीनभाई-शीतलबहन, प.भ. गुरुबक्षसिंहजी, प.भ. ज्ञानसिंगजी-खुशप्रीतजी, प.भ.कृतिबहन, प.भ. बीनाबहन देसाई, प.भ. बिन्नीबहन, प.भ. क्रिष्माबहन, प.भ. महेन्द्रभाई कविताबहन, प.भ. उमेशभाई-कविताबहन, प.भ. गौरवभाई, प.भ. धरीतभाई-किन्नरीबहन, प.भ. नवदीपभाई-अेनाबहन, प.भ. भार्गवभाई-नीतिबहन, प.भ. जीगरभाई-ख्यातिबहन, प.भ. कृष्णाभाई-दर्शनाबहन, प.भ. सुनीलभाई-टीनाबहन, प.भ. आशीषभाई-आरतीबहन, प.भ. सुमितभाई-पूजाबहन, प.भ. संजयभाई-कलाश्रीबहन ऐसे कईं हरिभक्तों के वहाँ पधरामणी करके सत्संग-भजन-धुन का लाभ दिया। साथ ही सभी हरिभक्तोंने भोजन तथा नास्ता की प्रेम से सेवा अर्पण की।

At Mahendrabhai and Kavitaben's home

Bhoomi Poojan at Amitdas's home

At Gauravbhai's home

At Navdeepbhai's home

Bal Mandal Sabha at Kinniben's home

At Bhargavbhai's home

At Jigarbhai's home

At Piyushbhai's home

At Krishnabhai's home

At Sunilbhai's home

प.भ. सचीनभाई वखारे के मित्र प.भ. अमितभाई के वहाँ भूमिपूजन के लिये उनके घर खास पधारे थे। बालमंडल की सभा प.भ. किन्नीबहन के घर हुई।

दि. २९ को सभी भक्तमंडल के साथ Opera and Harbour Bridge की मुलाकात भी ली और Boat Ride भी किया। सभीने मिलके बहुत आनंद किया और शाम को प.भ. सचीनभाई के वहाँ युवक-युवती मंडल की खास सभा भी की।

फोरमबहन विहारीया के ऑफिस में खास पधारे और उनके Boss को भी मिले। वहाँ से प.भ. ऋषिकभाई-अवधीबहन के नये घर भी पधारे थे।

At Opera and Harbour Bridge

With Foramben's Boss

At Rushikbhai's home

Grand Samuh Mahapooja at Sydney-Australia

दि. २७ को ऐसी अद्भुत समूह महापूजा का Sydney में आयोजन हुआ जो सत्संग के इतिहास में अविस्मरणीय और यादगार बन गया।

सुबह करीब ६.३० बजे ही The Granville Centre कई हरिभक्तों इस महापूजा की सेवा में जुड गये। सचीनभाईने महापूजा का पूरा plan तथा बैठने की व्यवस्था बहुत अच्छे तरीके से की। संकेतभाई, पूनमबहन, फोरमबहन, शीवानीबहन, कल्याणीबहन, शायोकाबहन, पियुषभाई, धीरजभाई, संजयभाई, सचीनभाई, मनीषभाई और साथीओंने डेकोरेशन तथा पूरे हॉल की सजावट सुंदर तरीके से की। दोपहर ४ बजे करीब ३०० हरिभक्तों, महानुभावों की उपस्थिति में समूह महापूजा का आरंभ हुआ। आज के महापूजा की विशिष्टता यह थी कि वशीभाई की महापूजा की यह ५०वी सालगिरह थी। उन्होंने महापूजा में विशिष्ट संकल्प भी करवाया। साथ ही दूसरी विशिष्टता यह थी कि गुरुहरि काकाजी महाराज का १०६वाँ प्रागट्यदिन निमित्त १०६ Couplesने इस समूह महापूजा में भक्तिभावपूर्वक भाग लिया था।

महानुभावों में जो खास पधारे थे वो माननीय श्री MP Julia Finn (Member for Granville) and Dr. Andrew Charlton (Member for Parramatta) जो कुछ समय के लिये ही आये थे, पर वे पूरी महापूजा के माहौल से इतने प्रभावित हुए कि महापूजा की समाप्ति तक रुके और उन्होंने अपना भाव भी व्यक्त किया। भरतभाई, वशीभाईने उनका खास अभिवादन भी किया। इस महापूजा में लंडन के प.भ. भगवानजीभाई रुघाणी के सुपुत्र प.भ. दिपेनभाईने उनके स्वागत में बहुत अच्छा सहकार दिया।

इस महापूजा में कईं नये हरिभक्तों भी जुडे थे, जिन्हें सत्संग की ज्यादा जानकारी भी नहीं थी। उन्होंने भी आध्यात्मिकता का ऐसा अनुभव किया कि जैसे महापूजा में मानो प्रत्यक्ष प्रभु ही प्रगट हुए हो! वशीभाई और हितेनभाईने महापूजा शास्त्रोक्त विधि द्वारा अद्‌भुत तरीके से करवाई।

प.पू. भरतभाई ने विशिष्ट आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सभी हरिभक्तों हररोज भगवान का नामस्मरण अवश्य करना तथा साप्ताहिक सभा के माध्यम से एकदूसरे के साथ जुडे रहना। यह जो समूह महापूजा हुई उससे अब **Sydney** में भी बहुत बडा सत्संग का **Centre** बनेगा। अभी हम जो पवई में बडा **Centre** बना रहे है वो आगे की पिढी को आध्यात्मिकता में ज्यादा सहायता हो उसे ध्यान में रखकर खडा कर रहे है। हमें हमेशा आगे बढते रहना है। तीन बात हमें जीवन में दृढ करनी है। **(१) सत्संग –** आज तो **Online** का जमाना आ गया है कि किसी भी स्वरुप का प्रवचन आसानी से सुन सकते है। केवल समय निकालना होता है। सत्संग जीवन में पक्का रखेंगे तो समझदारी ज्यादा बढेगी। सत्संग हमें नकारात्मक भाव में जाने से रोकता है। सत्संग यानि सच्चे सत्पुरुष का संग। वो हमें मिल जाये तो हमारे सारे काम हो ही जायेंगे। **(२) सेवाभावना –** हमारे संप्रदाय के मंदिरों में और गुरुद्वारा में कईं लोग बडी पदवी पे होने के बावजूद भी सेवा करते है। काकाजी के समय स्वामी रामतीर्थ की शताब्दी मना रहे थे। तब उसमें काकाजी, पागेजी और पोहेकरजी तीनोंने मिलकर काम सँभाला था। काकाजीने **The Real Essence of Tantra** पुस्तक लिखी और पागेजी को बोला कि इसमें कुछ लिखकर दो। तो उन्होंने लिखा कि मैंने दादुभाई को बर्तन साफ करते भी देखा

Grand Samuh Mahapooja at Sydney-Australia

Grand Samuh Mahapooja at Sydney-Australia

है और वापस मिटींग में हिस्सा लेते हुए भी देखा है। तो ऐसे वो सच्चे साक्षात्कारी पुरुष है। **(३) भजन –** हमारा स्वाध्याय जरुर से हमें करना ही है। हर परिस्थिति में भजन करना ही करना है। उससे हमारा संबंध प्रभु के साथ अखंड जुडा रहेगा और हमारी प्रगति जल्दी होगी। तो इस महापूजा का रहस्य समझकर उसे जीवन में उतारे। यहाँ प्रगट स्वरुपों की उपस्थिति में महापूजा हुई तो हम केवल इस महापूजा को याद भी करेंगे तो हमारा काम हो जायेगा।

अंत में सभीको महापूजा निमित्त सुंदर बेग में पूरे महापूजा की सामग्री भेट में दी गई, जिससे सभी यजमान बहुत ही खुश हुए।

भरतभाईने सभी यजमानों का एवम् महापूजा में परोक्ष या प्रत्यक्ष रुप से जिन-जिन व्यक्तिओंने सहकार दिया उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित किया। इस महापूजा में भोजन की सारी व्यवस्था प.भ. कृतिबहनने बहुत ही भावपूर्वक अर्पण की थी।

वहाँ के स्थानिक अखबारों में भी इस भव्य महापूजा की नोंध ली गई और इस तरह समूह महापूजा सभी के लिये एक यादगार प्रसंग बन गई। पवई मंदिर से महापूजा के आयोजन में सभी युवक मंडलने महेनत करके सभी सामग्री ऑस्ट्रेलिया भेजी थी, जिससे महापूजा की व्यवस्था करना सरल हो गया।

दि. १ मई को वशीभाई, हितेनभाई, मननभाई और संकेतभाई Singapore की यात्रा के लिये निकले। वहाँ प.भ. मिलापभाई-रिद्धिबहन, मिलापभाई के मित्र प.भ. संदीपभाई-शीतलबहन, प.भ. विराटभाई-किंजलबहन, प.भ. महेशभाई, प.भ. समीक्षाबहन के घर महापूजा-सत्संग-भजन किया। Sarvana Bhavan में प.भ. कृणालभाई-प.भ. जयमीनभाई को भी मिले।

At Singapore

At Milapbhai's home

At Viratbhai's home

At Singapore Eye

With Krunalbhai and Jaiminbhai

At Krishna Temple, Singapore

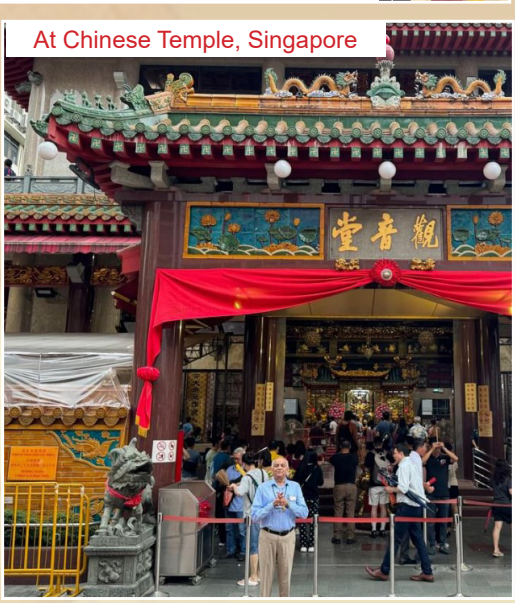

At Chinese Temple, Singapore

वहाँ के कृष्ण मंदिर, Chinese Temple तथा Srinivasa Perumal मंदिर में दर्शन किये। साथ ही भारत से पधारे पू. हरिकृष्णस्वामीजी और अन्य संतों को भी खास मिले।

Singapore की यात्रा दौरान मिलापभाईने सभी के लिये अच्छी व्यवस्था की।

दि. ७ मई को वापस भारत लौटे।

उस दौरान भरतभाई और किशोरभाई मार्स्टसने ऑस्ट्रेलिया में प.भ. भार्गवभाई-नीतिबहन, प.भ. रविभाई-मीराबहन के घर पधरामणी की। प.भ. सचीनभाई-कल्याणीबहन के घर पधारे तब प.भ. चिंतामणीबहन को मिले और इन सभी भक्तों के घर सत्संग-भजन करके आनंद किया।

At Samikshaben's home

At Bhargavbhai's home

At Dhirajbhai;s home

At Sachinbhai's home

With Chintamaniben

दि. ४ मई को उनकी विशिष्ट विदाय समारंभ की सभा हुई और भरतभाई दि. ५ मई को वापस भारत लौटे। किशोरभाई मास्टर्स कुछ दिन वही रहे और सभीको सत्संग का लाभ देकर दि. २१ मई को भारत पधारे।

❊ बुधवार, दि. १ मई को अनुपम मिशन संचालित खारघर मंदिर के १७वे पाटोत्सव निमित्त पवई की ओर से पू. राजुभाई तथा पू. माधुरीबहन और पू. कुसुमताई और अन्य हरिभक्तों खारघर पधारे थे और सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई तथा अन्य साधक भाईयों को मिले और आशीर्वाद प्राप्त किये।

At Kharghar Temple

❊ शनिवार, दि. ४ मई को ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के स्मृति प्रागट्यपर्व तथा वरुथिनी एकादशी और श्री वल्लभाचार्यजी की जयंती के शुभ दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी, पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी और अन्य संतों और हरिभक्तों खास पधारे थे। मंदिर के दर्शन करके उन्होंने विशिष्ट आशीर्वाद भी दिये। साथ ही स्वामीजी के स्मृति प्रागट्यपर्व निमित्त केक कटिंग भी हुआ। जाने से पहले प.भ. मितेशभाई से मिले और पवई के Project के बारे में विस्तृत जानकारी ली। उसके बाद उस स्थान पर जाकर उन्होंने पुष्पवर्षा की और यह कार्य जल्दी से जल्दी सफलतापूर्वक हो इसलिये धुन भी की।

P.P. Premswaroopswamiji at "Akshardham Temple, Powai

P.P. Premswaroopswamiji at Kandivali

रविवार, दि. ५ मई को शाम को कांदिवली में स्वामीजी के स्मृति प्रागट्यपर्व की विशिष्ट सभा हुई थी। पवई मंदिर की ओर से पू. राजुभाई ठक्कर और अन्य संतभाईयों तथा हरिभक्तों खास प्रेमस्वरुपस्वामीजी को मिलने पधारे थे और उनसे आशीष प्राप्त करके पवई की ओर से उन्हें हार भी अर्पण किया।

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

તા. ૨૩/૦૫/૨૦૨૪

બ્ર.સ્વ.યોગીજી મહારાજ અને બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીના દિવ્ય પ્રાગટ્યપર્વે

બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ અને બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી – આ બન્ને દિવ્ય વિભૂતિઓનો એક જ દિવસે તા. ૨૩ મેના પ્રાગટ્યદિન હોવો એ કોઈ દિવ્ય સંકેત જ છે. આ વસુંધરાનું કેવું સૌભાગ્ય છે કે બન્ને ગુણાતીત પુરુષોનો પ્રાગટ્યદિન સાથે આવે છે! ગુરુ–શિષ્યરૂપે પ્રગટ થયેલા આ બન્ને દિવ્ય વિભૂતિઓનું જીવન–કવન સહુ સાધકો માટે અને સહુ ગુરુભક્તો માટે એક અત્યંત પ્રેરણાદાયી સ્ત્રોત છે. બન્નેએ તેમના જીવનમાં અનેક દિવ્ય ગુણોનું દર્શન કરાવ્યું છે અને આપણને સહુને તેમાંથી અદ્‌ભુત પ્રેરણા મળે એવાં સીમાચિહ્નરૂપ આદર્શનાં ઉચ્ચ લક્ષ્યાંકો આપ્યાં છે. ધર્મ–નિયમ, સ્વધર્મ, ગુરુભક્તિ, ઉપાસના, આજ્ઞાપાલન, નિષ્ઠા, આત્મીયતા, સુહૃદભાવ, સેવા વગેરે અનેક ગુણોને તેમની પરાકાષ્ઠા ઉપર આત્મસાત કરીને તેઓએ અદ્‌ભુત દાખલો બેસાડ્યો છે.

આમ જો આપણે વર્ણન કરવા બેસીએ તો કેટલાંય પાનાં ભરાય અને તેમ છતાં એ વર્ણન યર્થાથ તો ન જ થાય અને અધૂરું પણ રહે. તેમ છતાં અત્રે આલેખાયેલા પ્રસંગો દ્વારા તેમના જીવન પરત્વે અંગૂલિનિર્દેશ કરતાં આપણે એમાંથી યત્‌કિંચિત્‌ પ્રેરણા મેળવીએ.

માર્ક નામનો એક છોકરો પરદેશની એક નિશાળમાં ભણતો હતો. એક દિવસ શાળામાંથી છૂટ્યા પછી એ પોતાના ભાઈબંધોની જોડે ઘરે ન ગયો. એકાદ ચોપડી બદલવાની હોવાથી થોડીવાર લાઈબ્રેરીમાં રોકાયો. છેક સાંજ પડી ત્યારે એ ઘરે જવા નીકળ્યો.

રસ્તામાં એણે જોયું કે સ્કૂલથી થોડે દૂર એના જેવડો જ એક છોકરો, ઘણાં બધાં પુસ્તકો, બેઝબોલનું બેટ, બેઝબોલનાં મોજાં અને અન્ય થોડો સામાન લઈને એની આગળ જઈ રહ્યો હતો. એના બે હાથમાં બરાબર રીતે સાચવીને ઉપાડી શકે એનાથી વધારે વસ્તુઓ હતી એ સ્પષ્ટ દેખાઈ આવતું હતું. અચાનક એ છોકરાનો પગ લથડ્યો અને એના હાથમાંની બધી વસ્તુઓ જમીન પર પડીને વેરવિખેર થઈ ગઈ. એ પોતે પણ નીચે પડી ગયો.

એ જોઈને માર્ક દોડ્યો. એણે પેલા છોકરાને ટેકો આપીને બેઠો કર્યો. એની વસ્તુઓ એકઠી કરીને ગોઠવી આપી. પછી અર્ધી વસ્તુઓ પોતે લઈને બોલ્યો, 'ચિંતા ન કરીશ દોસ્ત! તારો આટલો સામાન હું ઉપાડી લઉં છું. ચાલ, હવે એ બતાવ કે આપણે કઈ તરફ જવાનું છે? અને હા, મારું નામ માર્ક છે!'

પેલા છોકરાના રડમસ ચહેરા પર હાસ્ય ફૂટી નીકળ્યું. પોતાના ભાગનો સામાન ઊંચકતા એ બોલ્યો, 'મારું નામ જોન છે. આ રસ્તા પર અહીં નજીકમાં જ મારું ઘર છે. માર્ક, તારો ઘણો આભાર. દોસ્ત! પણ તું મારી સાથે આવીશ અને તારે મોડું થશે તો તારા ઘરે કોઈ ચિંતા નહીં કરે?'

'ના, હું મારા ઘરે સવારે કહીને જ નીકળ્યો છું કે મારે મોડું થશે. એટલે ચાલ, આપણે પહેલાં તારો સામાન પહોંચાડીએ.' માર્કે જવાબ આપ્યો.

બન્ને જણા વાતો કરતાં કરતાં જોનના ઘરે પહોંચ્યા. જોનની માતાએ નાસ્તો અને ચા તૈયાર કર્યા એટલીવારમાં બન્ને છોકરાઓએ ચેસનો એક દાવ પણ ખેલી નાંખ્યો. માર્કનો સ્વભાવ એટલો રમૂજી અને મળતાવડો હતો કે થોડીવારમાં જ એ જોનની માતા સાથે પણ સરસ રીતે વાતો કરવા માંડ્યો. એ બન્ને જણાને માર્ક સાથે વાતો કરવાની મજા પડી ગઈ. માર્કે ઘણા બધા જોક્સ કહીને બધાંને ખૂબ હસાવ્યાં પણ ખરાં.

એ દિવસ પછી તો માર્ક અને જોન બન્ને પાકા ભાઈબંધ બની ગયા. બન્ને એક જ બેન્ચ પર બેસતા અને લગભગ દરેક કાર્યક્રમ, સ્પર્ધા કે રમતમાં જોડે જ રહેતા. એમ કરતાં શાળાના દિવસો પૂરા થયા. એક દિવસ બન્નેને છૂટા પડવાનો સમય પણ આવી ગયો.

છૂટા પડવાની આગલી સાંજે જોને માર્કને ફોન કરીને પૂછ્યું કે 'માર્ક! હું તને મળવા માંગું છું. શું અત્યારે હું તારા ઘરે આવી શકું ખરો?'

માર્કે હા પાડી. જોન માર્કના ઘરે આવ્યો. બન્ને જણા માર્કના રૂમમાં બેઠા. થોડીકવાર આડીઅવળી વાતો થઈ એ પછી જોન બોલ્યો, 'માર્ક! તને આપણી પ્રથમ મુલાકાત યાદ છે? તેં મને ચોપડા–બેટ વગેરે મારા ઘરે પહોંચાડવામાં મદદ કરેલી, યાદ આવ્યું?'

'હા! તું ઘણો સામાન લઈ જઈ રહ્યો હતો, એ મને બરાબર યાદ છે.' માર્ક બોલ્યો.

‘પણ એ બધું હું શું કામ લઈ જઈ રહ્યો હતો એ તેં મને નહોતું પૂછ્યું, ખરું ને?’ ‘હકીકતે એ બધું હું મારું શાળાનું લોકર ખાલી કરીને ઘરે લઈ જઈ રહ્યો હતો, જેથી મારા ગયા પછી બીજા કોઈને એ ખાલી કરવાની ઝંઝટ ન રહે!’

‘તારા ગયા પછી એટલે?’ માર્કે નવાઈ સાથે પૂછ્યું.

‘દોસ્ત! જોન ગંભીર બની ગયો, વાત એમ છે કે એ દિવસ હું આપઘાત કરવાનો હતો. મારી માતાની ઊંઘની ગોળીઓનો આખો ડબ્બો એ દિવસે મારા ખિસ્સામાં હતો. હું જિંદગીથી સાવ હતાશ અને નિરાશ થઈ ગયો હતો. મારા પિતાજીના અવસાન પછી અમે આ શહેરમાં આવ્યા હતા. મારે કોઈ મિત્ર કે સગાંવહાલાં કે ભાઈબહેન નહોતાં. અરે, દિવસોના દિવસો સુધી મારી સાથે મારી માતા સિવાય વાત કરવાવાળું પણ બીજું કોઈ નહોતું. અમારી આર્થિક સ્થિતિ પણ ખૂબ નબળી હતી. મારી માતાને મારા અભ્યાસની તેમ જ ઘરની એમ બેવડી જવાબદારી પૂરી કરવા માટે રાત–દિવસ કામ કરવું પડતું. એ બધી તકલીફોથી કંટાળીને મેં જિંદગીનો અંત લાવવાનું નક્કી કરી નાંખ્યું હતું, પરંતુ માર્ક એ દિવસે તેં મને ટેકો કરેલો એ હકીકતે થોડોક સામાન ઊંચકવા માટેનો નહીં, પરંતુ મારી બાકીની જિંદગી હું ઉપાડી શકું એ માટેનો ટેકો બની ગયો હતો. એ નાનકડા ટેકાએ જ મારી જિંદગી બચાવી છે. દોસ્ત! તારો આભાર કઈ રીતે માનું!’

જોન આગળ ન બોલી શક્યો. એની આંખમાંથી અવિરત આંસુ વહેતાં હતાં, તો સામે માર્કની આંખો પણ ક્યાં કોરી હતી! એ જોનનો હાથ પકડીને ચૂપચાપ બેઠો હતો.

(ઉપરોક્ત પ્રસંગ એક આત્મીય ભગવદી પાસેથી મળ્યો છે.)

વર્ષો પહેલાંની એક સત્ય ઘટના છે. ગુજરાતના એક શહેરમાં બપોરે ધોમધખતા તડકામાં ૧૦ વર્ષનો એક ગરીબ છોકરો ઉઘાડા પગે સિગ્નલ પાસે ઊભો ઊભો ઝંડા વેચતો હતો. મોઢા પર આશા દેખાતી હતી કે કોઈક તો એ ઝંડા લેશે અને એને એમાંથી થોડાક પૈસા મળશે. પરંતુ આવા તડકાની અંદર Air Conditioned ગાડીમાં બેઠેલા મુસાફરોને ગાડીનો કાચ ખોલવાનું મન થતું નહતું. પેલો છોકરો કરગરતો હતો, પરંતુ એ દયાહીન મુસાફરો પર એની કોઈ જ અસર થતી નહતી અને એ વધુ વિનવે એ પહેલા તો સિગ્નલ ચાલુ થઈ જતું હતું અને પેલો છોકરો હતાશ હૃદયે એમને જોયા કરતો હતો. કોઈ કોઈ ગાડીવાળા એ છોકરાને ઝંડાનો ભાવ પૂછતા તો એ કહેતો કે ‘૧૦ રૂપિયાનો એક.’ ત્યારે એની સાથે રકઝક કરીને ૨૫ રૂપિયામાં ૩ ઝંડા લેવાની તેઓ વાત કરતા. છોકરો લાચારીથી તેમને જોઈને ન છૂટકે પણ ૨૫ રૂપિયામાં ત્રણ ઝંડા આપી દેતો, પણ એના ચહેરા પર ખુશી દેખાતી નહતી.

પછી ફરીથી સિગ્નલ બંધ થાય તેની રાહ જોતો નવી આશાઓ સાથે ત્યાં ઊભો રહેતો. થોડો વખત થયો અને સિગ્નલ ફરી બંધ થયું ત્યારે એક ગાડીમાંથી એક આધેડ વ્યક્તિએ કુતૂહલવશ થઈ ગાડીનો કાચ ખોલ્યો અને છોકરાની સ્થિતિ જોઈ કંઈપણ બોલ્યા વગર ખુલ્લા કાચ સાથે ગાડી પાછી ચાલુ કરી અને નજીકમાં જ આવેલ બૂટની દુકાને જઈ એ છોકરાના માપના નવા બૂટ લીધા અને ફરી ગાડીને એ જ સિગ્નલ પાસે લાવી ઊભી રાખી અને છોકરાને કહ્યું કે ‘આ નવા બૂટ પહેરી લે.’

નવા બૂટ જોઈને છોકરો ચકિત થઈ ગયો, પરંતુ પગમાં થતી વેદનાએ એને એ બૂટ લેવા મજબૂર કર્યો અને તેણે તરત જ એ બૂટ પહેરી લીધા અને એકદમ આભાર વશ થઈ તે વડીલને પૂછ્યું કે ‘તમે સાચું કહેજો કે તમે ભગવાન છો ને?’ વડીલે આનાકાની સાથે કહ્યું કે ‘ના ભાઈ, હું ભગવાન કંઈ રીતે હોઉં? હું તો સીધોસાદો એક સામાન્ય માણસ છું. તું ઉઘાડા પગે આવા તડકામાં ઝંડા વેચતો હતો તે જોઈને મને મેં જિંદગીમાં કરેલા સંઘર્ષ યાદ આવી ગયા અને તેથી તારા માટે આ નવા બૂટ લઈ આવ્યો છું.’ ત્યારે છોકરાએ ફરી પૂછ્યું કે ‘તમે ભગવાન ન હો તો જરૂરથી ભગવાનના મિત્ર તો હશો જ. નહિતર આવી રીતે મને કોઈ નવા બૂટ શું કામ આપે?’ એમ કહીને રડી પડ્યો. ત્યારે પેલા વડીલે એને પૂછ્યું કે ‘તું રડે છે શું કામ? નવા બૂટ મળ્યા તો તારે ખુશ થવું જોઈએ?’

ત્યારે છોકરાએ કહ્યું કે 'મેં ગઈકાલે જ રાત્રે ભગવાનને પ્રાર્થના કરી હતી. થોડા સમય પહેલાં મારા બાપુજી ગુજરી ગયા અને મારી મા અત્યારે બીમાર છે. પરંતુ મેં ભગવાનને કહ્યું હતું કે હું તારી આગળ મંદિરનાં પગથિયે બેસી ભીખ નહીં માંગું, પણ મહેનત કરીને જે કંઈપણ મળશે એમાંથી અમારું ગુજરાન ચલાવીશ. છેલ્લા થોડા વખતથી આ રીતે ઝંડા વહેચું છું પણ આ તડકામાં ભયંકર ગરમી વચ્ચે ઉઘાડા પગે દોડીદોડીને મારા પગમાં ફોલ્લા થઈ ગયા છે અને ખૂબ જ વેદના થાય છે. ગઈકાલે તો હું બરાબર સૂઈ પણ ન શક્યો. તેથી મેં ભગવાનને પ્રાર્થના કરી કે ભલે તે મને બાપ વિહોણો કરી મૂક્યો કે મારી માતાને ભલે બીમારી આવી, પરંતુ મારે ભીખ નથી માંગવી, પણ જો મને તું બૂટ અપાવી દે તો હું વધારે દોડીને આ ઝંડા વેચી થોડા પૈસા કમાઈ શકું અને એમ પ્રાર્થના કરતાં કરતાં વહેલી સવારે મને થોડીક ઊંઘ આવી. આજે મેં બહુ જ થોડા ઝંડા વેચ્યા અને તમે મને મળી ગયા અને કંઈપણ પૂછ્યા વગર કે કહ્યા વગર આમ સામેથી મને નવા બૂટ અપાવો તો એ ભગવાનના મિત્ર વગર તો બીજું કોણ હોઈ શકે!' એમ કહી તે રડી પડ્યો. આ સાંભળી પેલા વડીલ પણ ગદ્‌ગદ્ થઈ ગયા અને ત્યાં તો સિગ્નલ ચાલુ થઈ ગયું અને છોકરો નવા બૂટ પહેરી બીજી ગાડીઓ પાસે દોડી ગયો. પેલા વડીલની આંખમાં ધન્યતાનાં અશ્રુ હતાં અને છોકરાની આંખમાં ભગવાને પ્રાર્થના સાંભળી એનો આનંદ છલકાતો હતો.

હે વ્હાલા સત્સંગી સ્વજનો!

ઉપરોક્ત પ્રસંગો દ્વારા આપણને બે નાના છોકરાઓનાં જીવન પરથી આત્મીયતાનો અદ્‌ભુત પાઠ શીખવા મળે છે. જો કે એમાં બતાવેલી આત્મીયતા કે સેવાભાવના એ તો ખૂબ જ સ્થૂળ સ્તરની છે, પણ આગળ વધવા માટેનું પ્રથમ પગથિયું તો ચોક્કસ છે. એમાંથી જ આપણે એનાથી ઉચ્ચ સ્તરની આત્મીયતા અને સુહૃદભાવ પ્રત્યે ગતિ કરી શકીશું. આમ જોવા જઈએ તો આ બાળકોના જીવનમાં ઉપાસના, ગુરુભક્તિ, સત્સંગ વગેરે કશું જ નહતું, પરંતુ સાચા દિલની ભાવના હતી અને તે માટેનો પ્રામાણિક પ્રયત્ન હતો તો તેનું અદ્‌ભુત પરિણામ જોવા મળ્યું. આપણને તો ભગવાન સ્વામિનારાયણનો સંબંધ થયો છે, ગુણાતીત સત્પુરુષોએ પોતે જીવીને આપણને સુહૃદભાવ અને આત્મીયતાના અદ્‌ભુત પાઠ શીખવ્યા છે, આપણી આજુબાજુ આવું જ પ્રેરણાદાયી અને ઉચ્ચ જીવન જીવનારા જીવનમુક્તોનો સમાજ છે તો આપણે યોગીજી મહારાજ અને હરિપ્રસાદસ્વામીજીને એમના પ્રાગટ્યદિને પ્રાર્થના કરીએ કે અમારામાં આવા ઉચ્ચ જીવનની સુરુચિ પ્રગટાવો અને તે માટે અમે કૃતનિશ્ચયી થઈ હાં હાં ગડથલ કરી શકીએ તેવાં બળ–બુદ્ધિ–પ્રેરણા આપો.

❋ ❋ ❋

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya on 7th April at Kalyan. (2) Visit by P.P. Vashibhai at Karjat for distribution of bicycles in Kadav Local School by Yogi Divine Society, Sadbhav Foundation and Rotary Club of Mumbai on 15th April. (3) Pragatyadin Celebration of Swaminarayan Bhagwan and Ramnavami at "Akshardham" Temple, Powai on 17th April. (4) Distribution of Water by tankers at Karjat by Yogi Divine Society and Sadbhav Foundation on 20th April. (5) A Special Career Counselling Session at "Akshardham" Temple, Powai by Smt. Jagrutiji Kanhe on 21st April. (6) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 21st April. (7) P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai, P. Kishorebhai Masters and Devotees left for Australia and Singapore from 22nd April to 4th May. Also, Special Samuh Mahapooja at Sydney on 27th April. (8) Visit by P. Rajubhai, Saint Sisters and Devotees at 17th Patotsav of Kharghar Temple (Anoopam Mission) on 1st May. (9) Visit by P.P. Premswaroopswamji, Saints and Devotees at "Akshardham" Temple, Powai on 4th May. (10) Visit by P. Rajubhai and Devotees at Kandivali for B.S. Swamiji's Smruti Pragatya Parva on 5th May. (11) Article for B.S. Yogiji Maharaj and B.S. Hariprasadswamiji on their Pragatyadin on 23rd May.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta